RC 6PM –

Summary in English:

The concept of **degrowth** is gaining at ention in economic discussions, especially amid climate change and post-pandemic recovery. It promotes **intentionally reducing the size of wealthy economies**, arguing that **endless growth harms the planet**. Supporters say GDP hides issues like **inequality and environmental damage**.

However, critics warn that degrowth may cause **job losses, instability, and global ripple ef ects**, especially harming **developing nations**. The key is to **avoid harsh austerity** and aim for **balanced prosperity**.

Degrowth doesn't mean going backward. It supports **resource sharing, shorter work hours, and well-being over consumerism**. Scandinavian countries are seen as examples, though they still rely on trade. As climate threats rise, the debate between growth and sustainability is becoming urgent. Degrowth's future depends on **political action, new technologies, and shifting societal values**.

📝 सारांश हिंदी में:

हाल के वर्षों में "**डीग्रोथ**" की अवधारणा ने अर्थशास्त्र की मुख्यधारा में प्रवेश किया है, खासकर **जलवायु परिवर्तन और महामारी के बाद** की रिकवरी के संदर्भ में। यह विचार **समृद्ध देशों की अर्थव्यवस्थाओं को जानबूझकर सीमित करने** की वकालत करता है, यह कहते हुए कि **अनंत आर्थिक वृद्धि पर्यावरणीय सीमाओं के विरुद्ध है**।

समर्थक कहते हैं कि **GDP जैसे मापदंड असमानता और संसाधनों की बर्बादी को छिपाते हैं**, जबकि आलोचकों को डर है कि इससे **बेरोज़गारी, अस्थिरता और विकासशील देशों पर प्रभाव** पड़ सकता है।

चुनौती यह है कि **डीग्रोथ को पूरी तरह नकारने के बजाय** यह समझा जाए कि कैसे **कटौती और संतुलित समृद्धि में फर्क** किया जाए। डीग्रोथ का मतलब **पिछड़ना नहीं**, बल्कि **संसाधनों का समान वितरण, कम कार्य-घंटे, और उपभोक्तावाद के बजाय**

सामुदायिक व पारिस्थितिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना है। **स्कैंडिनेवियाई देश** इसके कुछ सफल उदाहरण माने जाते हैं।

जैसे-जैसे **जलवायु आपदाएं बढ़ रही हैं**, आर्थिक विकास बनाम पारिस्थितिक संतुलन की बहस और गंभीर हो गई है। डीग्रोथ एक **नई आर्थिक सोच बनेगा या सिर्फ एक विचार** बना रहेगा, यह इस पर निर्भर करेगा कि **राजनीतिक इच्छाशक्ति, तकनीकी नवाचार**, और **समाज की मूल्य-धारणाएं** कैसे बदलती हैं।